# अखंड सरूपनी अस्थिर

अखंड सरूपनी अस्थिर आकारे, सोभा कहूं घणवे करीने सनेह।
जोई जोई वचन आंणू कै ऊंचा पण न आवे वाणी मांहें तेह।
सोभा सिनगार , स्यामाजीनो निरखूं जी।।

ए सोभा न आवे वाणी मांहें, पण साथ माटे कहेवाणी ।
ए लीला साथना रूदेमां रमाडवा,तो में सबदमां आणी।।

चरण अंगूठा अति भला,पासे कोमल आंगलियो सार।
रंग तो अति रलियामणों दीसे,नख हीरा तणां झलकार।।

चीण चरणिए जोइए,मांहें वेल मोती झलकंत।
राती नीली चुन्नी कुन्दनमां,भली पेरे मांहें भलंत।।

मांहें मोती कोरे कसवी, त्रीजी नीली चुंनी सार।
अनेक विधनी वेल जो सोभे, छेडे करे झलकार।।

सुंदर सोभा स्यामाजी केरी, निरखी निरखी ने निरखूं जी।
अंतर टाली ने एक थया, इंद्रावती कहे हूं हरखूं जी ।।